GISI Impact Factor 0.2310
मई-जून २०१४
वर्ष-८ अंक-३
ISSN 0973-9777
ijraeditor@yahoo.in

MPASVO

IJRA

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रकाशन
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. द्वारा आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित
अन्य सहसंयोजन
• सार्कः अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका
• एशियन जर्नल ऑफ मार्डन एण्ड आयुर्वेदिक मेडिकल साइंस
वाराणसी, उ०प्र० (भारत)

www.anvikshikijournal.com

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष-8 अंक-3 मई-2014

शोध प्रपत्र

ऋग्वेदीय पुरुषसूक्त : ऐतिहासिक-समाजशास्त्रीय अध्ययन- डॉ. अर्चना शर्मा 1-4

श्रीमद्भागवत पुराण के उपाख्यानों में सांख्य एवं योग- डॉ. इन्दुमती सिंह 5-14

संस्कृत गज़ल विधा पर एक दृष्टि- डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी 15-17

महाकवि कालिदास के काव्यों की शैली- रमेश चन्द 18-20

धर्म सुधारकों एवं दार्शनिकों में अग्रणी महात्मा बुद्ध : एक संक्षिप्त विचार- डॉ. श्याम किशोर 21-24

914 / 1000 एक चिन्तन- डॉ. मनीषा आमटे 25-28

हिलाओं के मानव अधिकारों के संरक्षण में गैर सरकारी संगठनों का योगदान- डॉ. श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव 29-32

र्षीय योजनाओं में गरीबी उन्मूलन एवं कृषि उत्पादकता में सुधार की सर्वोपरि चिंता : सारण जिले के विशेष संदर्भ में- डॉ. सुषमा पराशर 33-38

'भारत में आर्थिक सुधारों का गरीबी पर प्रभाव- डॉ. सिद्धार्थ पाण्डेय 39-44

महाकाव्य "नामायण" : गुरु घासीदास का सत्य- डॉ. रमेश टण्डन 45-50

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी : पत्रकारिता के क्षेत्र में- डॉ. आरती बंसल 51-53

फणीश्वरनाथ "रेणु" की रचना "लाल पान की बेगम" : यथार्थवादी परम्परा के मनोवैज्ञानिक सोच का विवरण- डॉ. रोजी कुमारी 54-57

मालवी की बोलियाँ- डॉ. कला जोशी 58-70

कर्मबद्धपर्याय -पूर्व तथा पश्चिम दृष्टिकोण- डॉ. संगीता जैन 71-75

न्यायिक सक्रियता- डॉ. मनोज कुमार राय 76-77

मोहनदास करमचंद गांधी : जीवन समाज एवं राजनीति दर्शन- डॉ. विश्वनाथ मिश्र 78-86

उदारीकरण के संदर्भ में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का प्रभाव- डॉ. मनोज कुमार राय 87-88

रत के विभिन्न भागों में अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विप्लव : स्वतंत्रता का क्रांतिकारी आन्दोलन- ब्रजेश कुमार 89-92

गुप्तकालीन साहित्यिक स्त्रोत- रितु यादव 93-94

मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में संगीत का योगदान- सुमिता बनर्जी 95-98

मनुस्मृति में नारी के अधिकार एवं कर्तव्य के सकारात्मक पक्ष- रमेश चन्द 99-102

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564, पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777

भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2014) 8,45-50
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 24 मार्च 2014

महाकाव्य "नामायण" : गुरु घासीदास का सत्य

डॉ. रमेश टण्डन*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित *महाकाव्य "नामायण" : गुरु घासीदास का सत्य* शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं *रमेश टण्डन* घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

सारांश

18 दिसम्बर का दिनांक किसी परिचय का मोहताज नहीं है। गुरू घासीदास जयन्ती के नाम से हर वर्ष इस दिनांक को शासकीय अवकाश एवं शुष्क दिवस घोषित किया जाता है। इनके नाम से गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिलासपुर एक जाना-पहचाना नाम है। गरीब कृषक परिवार में जन्में, अभावों में पले, दूसरों के घर में मजदूरी करके पेट भरने वाले घासीदास ने घने जंगल में जाकर कठिन तपस्या की। सतपुरूष की कृपा व आशीर्वाद से इसने सतनाम रूपी अमृत को प्राप्त किया। 'सत्य ही मानव का आभूषण है' के प्रणेता गुरू घासीदास जी मद्य-पान, मांस-भक्षण, मूर्ति-पूजा, मन्दिर, तीर्थ-यात्रा, बाह्याडम्बर आदि के विरोधी रहे। सतनाम-धर्म के गुरू-संत गुरू बाबा घासीदास जी की कृपा व आशीर्वाद को पंथी-गीत व पंथी-नृत्य के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। महाकाव्य 'नामायण' के माध्यम से कवि नृसिंह ने 'सत' नाम का अयण किया और गुरू घासीदास के चरित्र, अलौकिक गुण एवं उपदेशों का बखान किया है।

कूट शब्द : 'सत्य ही मानव का आभूषण है'

गुरू का संक्षिप्त परिचय

संत वीरभानदास जी के वंश में संत मेदनीदास जी अपनी पत्नी मायावती के साथ नारनौल (हरियाणा) से छत्तीसगढ़ आये। तब निम्न क्रम में संत गुरू बाबा घासीदास जी; पिता- महंगूदास, माता- अमरौतीन के घर ग्राम- गिरौदपुरी में 18 दिसम्बर सन् 1756 ई0 को अवतरित हुए- 'मेदनीदास- दुकालूदास- सगुनदास- महंगूदास'

महंगूदास की पाँच संतानें हुईं- 1. ननकू, 2. मनकू, 3. घासीदास, 4. गंगा और 5. जोगी।

गुरू घासीदास का विवाह अपने से 05 वर्ष छोटी सफुरा माता से हुआ। इनसे 05 संतानें हुईं- 1. अमरदास, 2. बालकदास, 3. आगरदास, 4. अड़गड़िहा दास, 5. सहोद्रा (सुभद्रा)। आगरदास के वंश में विजयगुरू और इसके पुत्र रूद्रकुमार (विधायक, छ.ग.

* सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय (खरसिया) रायगढ़ (छ.ग.) भारत

© लेखक 2014, एम.पी.ए.एस.वी.ओ. मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित, सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

विधानसभा) हैं। सतनाम की परम पूजारिन सुभा लुहारिन के विशेष आग्रह पर गुरू घासीदास जी, जन्म स्थली गिरौदपुरी को त्याग कर कर्म की भूमि भण्डार पुरी में आकर बसे। यहीं से इन्होंने पैदल सतनाम यात्रा की शुरूआत की। इसे रावटी या सतनाम यात्रा के नाम से जाना जाता है। मुख्य रूप से इन्होंने डोंगरगढ़, खैरागढ़, भवरदा, भोरमदेव, पण्डरिया, पानाबरस, रतनपुर, कोड़ीदलहा, रायगढ़, खरीयार, खल्लारी, डोंगरी, कांकेर, दन्तेवाड़ा, राजनांदगाँव, कवर्धा, मण्डला, बालाघाट, जबलपुर, अमरकंटक जैसे प्रसिद्ध स्थानों पर सतनाम की डंका बजायी।

गुरू घासीदास की बौद्धिक क्रान्ति सन् 1820 ई0 से 1830 ई0 तक अत्यधिक प्रभावशाली रही। बाबा अपने परिवार एवं शिष्यों समेत सत संदेश देते आगे बढ़े। गिरौदपुरी से मड़वा, इसके बाद तेंदुभाठा, पश्चात् बरपाली होते हुए गिधौरी पहुँचे, जहाँ बरघाट आज भी प्रमाणित है, इसे छ.ग. के महान संगम के रूप में तिरोफल्लागंगा के नाम से जाना जाता है। यहाँ इसने महानदी के तट पर मृत बंदर को जीवित किया। तत्पश्चात् शिवरीनारायण, खरौद, भदराधाम (पामगढ़), नवागढ़ होते हुए अमरतालपुरी धाम पहुँचे; यहाँ चरण पादुका का चिन्ह, श्रीफल में प्रमाण स्वरूप विद्यमान है और प्रतिवर्ष चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में पंचमी, षष्ठी एवं सप्तमी को भव्य मेला भी यहाँ लगता है। इसके पश्चात् पचरीधाम होते हुए दलहा पहाड़ गये, जहाँ सात दिनों तक रहे; यहाँ प्रतिवर्ष नागपंचमी के दिन सतनाम मेला का आयोजन होता है तथा यहाँ उल्लेखनीय केराचुआँ, सूर्यकुण्ड विद्यमान है।

इनकी जन्म स्थली गिरौदपुरी में प्रति वर्ष फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में तिथि पंचमी से सप्तमी तक तीन दिवसीय भव्य सतनाम मेला का आयोजन होता है। यहाँ का चरण कुण्ड, अमृत कुण्ड विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने छाता पहाड़ पर तप किया था। छाता पहाड़ में एक छिद्र के राख या धूल को पान कर श्रद्धालु अपने आप को धन्य मानते हैं। छाता पहाड़ एक बहुत बड़ा शिलानुमा पत्थर है जो गुरू घासीदास जी की धुनी के राख हैं और बाद में पत्थर में तब्दील हुए हैं। मेला के समय लाखों श्रद्धालु दर्शनार्थ यहाँ आते हैं। मेला के दौरान प्रदेश के मुख्यमंत्री भी दर्शनार्थ आते हैं। यहाँ बहुत बड़ा भण्डारा लगता है जिसमें कोई भी बिना रूपये के भोजन ग्रहण कर सकता है। सम्पूर्ण मेले में कोई बीड़ी तक का भी नशा नहीं करता। यहाँ करोड़ों रूपये की लागत से एक गगनचुम्बी जय स्तम्भ नवनिर्मित है।

वैसे सतनाम धर्म के जय स्तम्भ का अपना एक आध्यात्मिक महत्त्व है- यह 03 सीढ़ी के ऊपर 21 हाथ के खम्भे के रूप में स्थापित होता है, 21 हाथ होने के पीछे एक रहस्य है- मानव शरीर 84 अंगुल का होता है जिसे 04 (युग) से विभाजित करने से 21 शेष आता है। खम्भे के शीर्ष में 03 हुक लगाकर इसमें 05 हाथ का एक डण्डा घुसाते हैं, 03 हुक करुणा, सत्य और अहिंसा के प्रतीक हैं तो 05 हाथ का डण्डा पंच तत्त्व का प्रतीक है जिससे यह नश्वर शरीर बना है। इस डण्डे पर श्वेत चतुर्भुज ध्वजा, जो सवा गज की होती है, लगाते हैं। यह चतुर्भुज ध्वजा चारों युग और चारों दिशाओं अथवा समता, शांति, प्रेम और त्याग का प्रतीक है।

बाबा जी के जन्म दिन को शासकीय अवकाश (18 दिसम्बर-गुरू घासीदास जयन्ती) के रूप में घोषणा, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल जी ने सन् 1970 में छ.ग. के लिए किया; इसी अवकाश की घोषणा म.प्र. में सन् 1972 में मुख्यमंत्री अर्जुनसिंह के द्वारा की गई। इनके नाम से गुरू घासीदास विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1983 में बिलासपुर में हुई, अब यह विश्वविद्यालय केन्द्रीय विश्वविद्यालय है तथा इनके नाम से डाक टिकट भी जारी हुआ, 1987 में।

गुरू नानक, कबीर साहेब, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, ज्योतिबा फूले की राह के संत शिरोमणि गुरू घासीदास जी सत्य और मानवता के पर्याय थे। इन्होंने कहा- "सत्य ही मानव का आभूषण है।" और उपदेश दिये- जानो, छानो तब मानो। इनके महत्त्वपूर्ण नारें हैं- नवा जागरण, नवा बिहान और नया सबेरा। हम इनके प्रति श्रद्धा और पूज्य का भाव, पंथी गीत तथा पंथी नृत्य के द्वारा प्रकट करते हैं। पंथी नृत्य के प्रणेता देवदास बंजारे एवं गुरू घासीदास जयंती (1938 में प्रारम्भ) के सूत्रधार नकुलदेव ढीढ़ी हैं।

जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की कथा का वर्णन महर्षि बाल्मीकि ने रामायण के रूप में किया; उसी प्रकार पाखण्ड, बाह्याडम्बर व मूर्ति पूजा के विरोधी, सत्य के पर्याय गुरू घासीदास जी के नाम का वर्णन खेमराज मनोहरदास नृसिंह ने नामायण के रूप में किया है। महाकाव्य "नामायण" के अनुशीलन उपरान्त गुरू घासीदास जी से जुड़े विचित्र पहलुओं को प्रकट करने एवं उनके उपदेशों को लोकहित में सर्व सुलभ करने का एक छोटा-सा प्रयास मैंने यहाँ पर किया है।

ज्ञान

घासीदास का मन घर में बिल्कुल नहीं लगता था। ये हमेशा ज्ञान की बातें बताते थे, जिससे इसके भाई इसे पागल समझते थे- "तुम जाहु गृह मैं नहीं जाऊँ। मैं सत नाम भजन मन लाऊँ।।/ ननकू मुनकू सुनी अस बानी। रोकी लियो घसिया गहि पानी।।/ घसिया कहे ज्ञान के बानी। सुनत सबहि पागल भय जानी।।/ बर बस बांधी घरे लेई आवा। काम मिला नहिं काह कमावा।।/ घर में घसिया मन नहीं भावै। हरदम सबको ज्ञान बतावै।।/ कोई बैहा पगला कोई जानी। कोई जीव समुझै घसिया ज्ञानी।।/ घसिया कहै रहौं घर नाही। भटके जीवहि राह बताही।।/ गृह कारज मह मन नहीं लागा। खानपान कर सुधि सब त्यागा।।"(पृष्ठ 205)

सत्यनाम

बाद में ये छाता पहाड़ में छः माह तक कठिन तपस्या किये। वहाँ सतपुरुष ने दर्शन देकर सतनाम की शक्ति प्रदान किये- "कठिन तपस्या कीन्हेऊ शठ मासा। दिव्य शक्ति पायेउ घासीदासा।।/ शक्ति पाय वापस गृह आवा। सत संदेश लोगन को सुनावा।।/ सतनाम में जो गुण होई। ताको काटि सकै नहि कोई।।/ बिना साधे न मिलै सतनामा। देखि भुलायो सुन्दर चामा।।"(पृष्ठ 602)

घोर जंगल में तप करते समय एक दिन सतपुरुष, रूप बदलकर (सिंह के रूप में) परीक्षा लेने के उद्देश्य से, डराने या भक्षण करने घासीदास के सम्मुख आये। परन्तु ये विचलित नहीं हुए, उल्टे सिंह को जादूगर की संज्ञा दिए। परीक्षा में सफल होने के बाद सतपुरुष ने घासीदास को अपने दिव्य रूप का दर्शन कराया और कहा कि इस माया रूपी संसार में अपने रूप को गुप्त रखा जाता है- "धूनी पार करी धावत भयेऊ। सिंह गहन वन भीतर गयेऊ।।/ घासीदास तब सन्मुख आवा। अर्पन तन कहि शीष नवावा।।/ कई दिन ते तुम खायो नाहीं। भक्षण तन करो भूख बुझाही।।/ किन्हा सिंह तब गर्जन भारी। मानहु अबहीं खाई बिदारी।।/ घासीदास कहा देर ना कीजै। देहीं अपावन पावन कीजै।।/ सुनत सिंह बोले अस बाता। मानुष कर बोली सख्याता।।/ घासीदास मैं लीन्ह परीक्षा। अटल सत्य तप फल अनीक्षा।।/ अब मानों मम बचन प्रमाणा। भा तप सिद्ध मांगु वरदाना।।/ अस कही प्रगटेऊ दीव्य स्वरूपा। नख शिख परम प्रकाश अनूपा।।/ चार भुजा चारू वन माला। मुख द्युति दमकत नैन विशाला।।"(पृष्ठ 266)

"मैं समझा था सतगुरू होई। तुम तो हौ जादुगर कोई।।/ भ्रम हुवा तुमको मैं जाना। मैं नहीं साधत प्रेत मसाना।।/ जाओ कहीं मरघट पर देखो। साधत भूत मसान अनेको।।/ ताहि जाय सिद्धी वर दीजै। पूर्ण मनोरथ तिनकर कीजै।।/ सुनी सतपुरूष कहा मृदु बानी। घासीदास तुम हौ बड़े ज्ञानी।।/ घासीदास कर जोरिके, चरण नवायो माथ। यही रूप किमि धारत, कहो भेद की बात।।/ पुरूष कहा यह माया देशा। पकड़ रखा है सबकर केशा।।/ जब आऊं माया कर देशा। तब मैं गुप्त राखौं निज भेषा।।"(पृष्ठ 267)

घासीदास से, दुष्टों द्वारा दिए गए कष्ट अब सहा न गया। तब सतपुरुष ने उन्हें सत्यनाम में अमृत दिया- "सुनेऊ सहेंऊ बहुत अपमाना। अब न सम्भालि सकौं यह बाना।।/ सुनि सत्य पुरूष कहा सुचि बैना। घासीदास मन मानो ना मैना।।/ सत्यनाम में अमृत बासा। बचन सत्य करो विश्वासा।।"(पृष्ठ 270-271)

सत्यनाम रूपी अमृत का ध्यान करके गुरु घासीदास ने अपनी मृत पत्नी सफुरा को जिंदा किया- "देखि लोग सकल धधियाहीं। पहुँचे जाई मरघट के माहीं।।/ ठाढ़ भये मठ के पैताने। नैन मुंदि के ध्यान लगाने।।/ कर में लिये कमण्डल पानी। सत्य अटल स्वास ठहरानी।।/ ढारि दिये मठ पर जल सोई। फाटेउ धरती फांक दुई होई।।/ तेहिते प्रगटेउ सफुरा की लाशा। चकित लोग सब देखि तमाशा।।/ चुल्लु भर बहोरि जल लीन्हा। अमिय नाम तामें पढ़ि दीन्हा।।/ सत्य नाम सुमिरन गुरु कीन्हा। सफुरा मुख सोइ अमृत दीन्हा।।/ हलचल भये अंग सब डोला। सत्यनाम सफुरा मुख बोला।।"(पृष्ठ 282-283)

विलक्षण स्वभाव

घासीदास गरीब परिवार से थे। इन्हें जीविकोपार्जन के लिए दूसरे के घर में काम-मजदूरी करना पड़ता था। एक बार दूसरे के खेत में हल चलाने गए थे। वहाँ अपने आप बैल हल में चल रहे थे और खेत-जुताई का काम हो रहा था। उस समय घासीदास जी खेत के पास में बैठकर ध्यानमग्न थे। खेत का मालिक जब देखा, आश्चर्य में पड़ गया। वह जान गया कि घासीदास कोई सामान्य

व्यक्ति नहीं है, कोई सिद्ध भक्त है- "एक दिन वर्षा भई अकरासी। घसिया भोर काम पर जासी।।/ घसिया जब किसान घर आयो। नागर जोतन खेत पठायो।।/ नागर जुवा अधर अटकाये। घसिया खांध भार नहि आये।।"(पृष्ठ 209)

"गयेउ किसान खेत के माही। रेंगत बैल जोतावत जाही।।/ देखि न परा जोतैया नागर। बैठे पार पर ध्यान लगाकर।।/ पार ऊपर घसिया लखि पाई। नैन मुंद के ध्यान लगाई।।/ शरण-शरण के शब्द सुनि, छुटि गया जब ध्यान। नयन खोलि देखे जभि, घसिया अपन किसान।।/ कहा किसान अब मैं पहचाना। घासीदास तुम भक्त सुजाना।।/ तुम पक्का पहुंचे हो साधू। क्षमा करहु मोरे अपराधु।।/ अब तुमको ना करावौं कामा। बैठे भजन करहु सतनामा।।"(पृष्ठ 210)

जहाँ सत्य का परचम लहराने लगता है, वहाँ उसके विरोधी भी पैदा हो जाते हैं। घासीदास के काल में भी इनके प्रति जलने वालों की कमी न थी। उन्होंने भी इन्हें असम्भव कार्य करने के लिए (भांटा के खेत से मिर्च लाने) भेजा। परन्तु जिसके साथ सतनाम है, उसे किस बात की चिंता ? उसने भांटा के खेत से मिर्च लाकर सबको हतप्रभ कर दिया- "दुष्ट हृदय चुभत जिमि काँटा। भेज दिये बारी जहाँ भांटा।।/ कहा तोरि मिरचा लै आवहू। मिरचा छांड़ और जनी लावहू।।/ घासीदास पहुंचि गये बारी। देखत भा निज नैन निहारी।।/ मिरचा भये लगे फल भूरी। टुकना भर सोई लिन्हो तोरी।।/ गये दुष्ट तहाँ लखन तमाशा। करने घासीदास परिहासा।।/ जब देखा मिरचा के बारी। सबके उर भये अचरज भारी।।/ साधू साधू लोग सब कहही। सुनी सुनी दुष्टन के उर दहही।।"(पृष्ठ 213)

पुनः एक कारनामा ! जिसके साथ सतपुरुष हो, वह कुछ भी कर सकता है। दुष्टों ने कष्ट देने के लिए तुरन्त खाना खाकर काम पर आने को कहा। स्नान करने के बाद घासीदास ने गीले कपड़े सुखने के लिए इंतजार नहीं किया अपितु वह अपने साथ-साथ, आकाश में कपड़े उड़ाते-सुखाते, चलते काम पर आ गए- "दुष्टन रहो ताहि कर घाता। घासीदास कर देखत बाटा।।/ देखा बहुत दूर से आवत। अधर में इक वस्त्र उड़ावत।।/ घासीदास नोहाय के, पहिरो सूखी लंगोटी। अधर में सुखात चले, गुरू की गिल्ली धोती।।"(पृष्ठ 215)

सतनाम पर अवलम्बित गुरू घासीदास जी बिना आग के भोजन पका लिए। यह आम आदमी के लिए आश्चर्य की बात थी- "देखा सत्य नाम की माया। वस्त्र शीष उपर करि छाया।।/ सहज चाल घसिया चलि आवत। निचे धरती पग न जलावत।।/ चावल दाल सम्पूट करि राखा। खोला ताहि भोजन अभिलाषा।।/ देखत भये अचरज सब भारी। दाल भात भोजन रहा त्यारी।।"(पृष्ठ 215)

उपदेश

(1) मांस और मदिरा का सेवन न करें, कष्ट (बीमारी) आने पर पूजा-पाठ के ढोंग में न पड़ें- "जीव घट को मरघट बनावत। यामे मुर्दा आनि गड़ावत।।/ मानव तन पाकर जो धरनी। स्वान सियार पशु के करनी।।/ पी मदिरा अरू भक्षत मासा। देवी देवता व्रत उपवासा।।/ दुखन में जड़ पत्थर पूजे। अंध अवज्ञ ढोंग अरूझे।।"(पृष्ठ 355)

(2) सभी जीव एक समान हैं, कोई छोटे-बड़े नहीं हैं, जाति प्रथा मिटायें- "सो मानहु मम बचन प्रमाणा। भरम त्यागि सुमिरहु सतनामा।।/ जीव बराबर सब घट जानो। छोटा बड़ा ताको नहीं मानो।।/ जाति पांति कर भरम भगावो। ऊँच-नीच कर भेद मिटाओ।।"(पृष्ठ 446)

(3) मनु ने जाति बनाकर विकास का मार्ग अवरूद्ध किया। मंदिर-मस्जिद और मूर्ति-पूजा व्यर्थ है, पूजा-पाठ एवं दान के बहाने ब्राह्मण-पण्डित लुटेरे का कार्य करते हैं। अतः इन पर विश्वास न करें- "मानव मानव हम एकहि भाई। पुरुष अंश हम सबमें समाई।।/ एक पिता कर हम संताना। जाति-पांति कहां से आना।।/ इक बिरवा कर फूल सब, एकहिं आंगन माहि। एकहि माली जड़ सींचत, पालत पोषत ताहि।।/ तीरथ धाम जगत बहु छाये। सुन्दर मूरति गढ़ि बैठाये।।/ ठांव ठांव मंह पण्डा पुजेरी। ठगि ठगि लूटैं घेरी बेरी।।/ कांस पीतल के मूर्ति बनाके। थैला जेब भगवान को राखे।।/ बाम्हन सबके गिरहा काटे। बाम्हन के गिरहा कोन काटे।।/ बाम्हन घर बड़ छूत बिमारी। मुक्ति मांगे द्वारी-द्वारी।।/ मनुवाद कर खेल यह, जाति पांति बनाया। मानव-मानव में भेद कर, ऊँच अरु नीच बताय।।"(पृष्ठ 447)

(4) सभी जीवों पर दया का भाव रखें- "सब घट आत्मा एक सम जानो। पुरूष अंशते भिन्न न मानो।।/ आपन रूप सभी मह जानो। दया भाव सब जीव पर लानो।।"(पृष्ठ 448)

व्यक्ति नहीं है, कोई सिद्ध भक्त है- "एक दिन वर्षा भई अकरासी। घसिया भोर काम पर जासी।।/ घसिया जब किसान घर आयो। नागर जोतन खेत पठायो।।/ नागर जुवा अधर अटकाये। घसिया खांध भार नहि आये।।"(पृष्ठ 209)

"गयेउ किसान खेत के माही। रेंगत बैल जोतावत जाही।।/ देखि न परा जोतैया नागर। बैठे पार पर ध्यान लगाकर।।/ पार ऊपर घसिया लखि पाई। नैन मुंद के ध्यान लगाई।।/ शरण-शरण के शब्द सुनि, छुटि गया जब ध्यान। नयन खोलि देखे जभि, घसिया अपन किसान।।/ कहा किसान अब मैं पहचाना। घासीदास तुम भक्त सुजाना।।/ तुम पक्का पहुंचे हो साधू। क्षमा करहु मोरे अपराधु।।/ अब तुमको ना करावौं कामा। बैठे भजन करहु सतनामा।।"(पृष्ठ 210)

जहाँ सत्य का परचम लहराने लगता है, वहाँ उसके विरोधी भी पैदा हो जाते हैं। घासीदास के काल में भी इनके प्रति जलने वालों की कमी न थी। उन्होंने भी इन्हें असम्भव कार्य करने के लिए (भांटा के खेत से मिर्च लाने) भेजा। परन्तु जिसके साथ सतनाम है, उसे किस बात की चिंता ? उसने भांटा के खेत से मिर्च लाकर सबको हतप्रभ कर दिया- "दुष्ट हृदय चुभत जिमि काँटा। भेज दिये बारी जहाँ भांटा।।/ कहा तोरि मिरचा लै आवहू। मिरचा छांड़ और जनी लावहू।।/ घासीदास पहुंचि गये बारी। देखत भा निज नैन निहारी।।/ मिरचा भये लगे फल भूरी। टुकना भर सोई लिन्हो तोरी।।/ गये दुष्ट तहाँ लखन तमाशा। करने घासीदास परिहासा।।/ जब देखा मिरचा के बारी। सबके उर भये अचरज भारी।।/ साधू साधू लोग सब कहही। सुनी सुनी दुष्टन के उर दहही।।"(पृष्ठ 213)

पुनः एक कारनामा ! जिसके साथ सतपुरुष हो, वह कुछ भी कर सकता है। दुष्टों ने कष्ट देने के लिए तुरन्त खाना खाकर काम पर आने को कहा। स्नान करने के बाद घासीदास ने गीले कपड़े सुखने के लिए इंतजार नहीं किया अपितु वह अपने साथ-साथ, आकाश में कपड़े उड़ाते-सुखाते, चलते काम पर आ गए- "दुष्टन रहो ताहि कर घाता। घासीदास कर देखत बाटा।।/ देखा बहुत दूर से आवत। अधर में इक वस्त्र उड़ावत।।/ घासीदास नोहाय के, पहिरो सूखी लंगोटी। अधर में सुखात चले, गुरू की गिल्ली धोती।।"(पृष्ठ 215)

सतनाम पर अवलम्बित गुरू घासीदास जी बिना आग के भोजन पका लिए। यह आम आदमी के लिए आश्चर्य की बात थी- "देखा सत्य नाम की माया। वस्त्र शीष उपर करि छाया।।/ सहज चाल घसिया चलि आवत। निचे धरती पग न जलावत।।/ चावल दाल सम्पूट करि राखा। खोला ताहि भोजन अभिलाषा।।/ देखत भये अचरज सब भारी। दाल भात भोजन रहा त्यारी।।"(पृष्ठ 215)

उपदेश

(1) मांस और मदिरा का सेवन न करें, कष्ट (बीमारी) आने पर पूजा-पाठ के ढोंग में न पड़ें- "जीव घट को मरघट बनावत। यामे मुर्दा आनि गड़ावत।।/ मानव तन पाकर जो धरनी। स्वान सियार पशु के करनी।।/ पी मदिरा अरू भक्षत मासा। देवी देवता व्रत उपवासा।।/ दुखन में जड़ पत्थर पूजे। अंध अवज्ञ ढोंग अरूझे।।"(पृष्ठ 355)

(2) सभी जीव एक समान हैं, कोई छोटे-बड़े नहीं हैं, जाति प्रथा मिटायें- "सो मानहु मम बचन प्रमाणा। भरम त्यागि सुमिरहु सतनामा।।/ जीव बराबर सब घट जानो। छोटा बड़ा ताको नहीं मानो।।/ जाति पांति कर भरम भगावो। ऊँच-नीच कर भेद मिटाओ।।"(पृष्ठ 446)

(3) मनु ने जाति बनाकर विकास का मार्ग अवरूद्ध किया। मंदिर-मस्जिद और मूर्ति-पूजा व्यर्थ है, पूजा-पाठ एवं दान के बहाने ब्राह्मण-पण्डित लुटेरे का कार्य करते हैं। अतः इन पर विश्वास न करें- "मानव मानव हम एकहि भाई। पुरुष अंश हम सबमें समाई।।/ एक पिता कर हम संताना। जाति-पांति कहां से आना।।/ इक बिरवा कर फूल सब, एकहिं आंगन माहि। एकहि माली जड़ सींचत, पालत पोषत ताहि।।/ तीरथ धाम जगत बहु छाये। सुन्दर मूरति गढ़ि बैठाये।।/ ठांव ठांव मंह पण्डा पुजेरी। ठगि ठगि लूटैं घेरी बेरी।।/ कांस पीतल के मूर्ति बनाके। थैला जेब भगवान को राखे।।/ बाम्हन सबके गिरहा काटे। बाम्हन के गिरहा कोन काटे।।/ बाम्हन घर बड़ छूत बिमारी। मुक्ति मांगे द्वारी-द्वारी।।/ मनुवाद कर खेल यह, जाति पांति बनाया। मानव-मानव में भेद कर, ऊँच अरु नीच बताय।।"(पृष्ठ 447)

(4) सभी जीवों पर दया का भाव रखें- "सब घट आत्मा एक सम जानो। पुरूष अंशते भिन्न न मानो।।/ आपन रूप सभी मह जानो। दया भाव सब जीव पर लानो।।"(पृष्ठ 448)

(5) सभी जीव एक समान हैं- ''हड्डी चर्म अरू मांस तनु, लाली लहू लखाय। सब प्राणी मह जीव एक, गुरूजी दीन्ह दर्शाय।।''(पृष्ठ 449)

(6) सभी ज्ञानों में श्रेष्ठ 'सत्य-मार्ग' है- ''चार वेद कंठस्थ हो, अरु दस अष्ट पुरान। सत्य परख पावा नहीं, तो विद्या किस काम।।''(पृष्ठ 463)

(7) हृदय में सत्य और सहिष्णु का भाव रखें, गरीबों की सेवा करें और सत्कर्म करते हुए सुसंगत में जीवन बितायें- ''खान पान करिहौ निरवारी। मन होई है निर्मल जस वारी।।/ अन्न से होवत मनहि निर्माणा। मनहि करावत कर्म विधि नाना।।/ सत्य भाव दया उर धारो। झूठ पाखंड तृष्णा तन जारो।।/ दीन दुखी सेवा मन लाओ। सत संगत मह जीवन बिताओ।।/ सत्य कर्म करहु नित भाई। त्यागि अधर्म कुकृत्य बिहाई।।''(पृष्ठ 464)

(8) जीव-हत्या न करें- ''जीव हिंसा सम पातक कोऊ नाही। मांस भखे सो मानव नाही।।''(पृष्ठ 542)

(9) मेहनत करके अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करें, सकारात्मक सोच रखें, बुरी आदतों को त्यागें, व्यभिचार से दूर रहें, बीड़ी-तम्बाखू का सेवन न करें, जुआ न खेलें; खान-पान, व्यवहार व रीति-रिवाज में सुधार करें- ''मेहनत करि निज दशा सुधारो। निहि काहु सन हाथ पसारौ।।/ अपनी सोच बदल तुम डालो। हीन भावना मन से निकालो।।/ बूरे व्यसन त्यागन करि डारो। मेहनत करहु गरीबी निवारो।।/ मंद मास झनि करहु आहारा। करहु सुकर्म तजहु व्यभिचारा।।/ नशा पान मत करहु कभू, बीड़ी तम्बाखू जान। जुवा खेलत धन ना बचे। सीख धरहु हित जान।।/ खान पान चलन व्यवहारा। रीति रिवाज में करहु सुधारा।।''(पृष्ठ 543)

(10) अंधविश्वास न करें, शिक्षा प्राप्त करें, पुत्र एवं पुत्री को एक समान मानें, महिला को आगे लायें- ''रूढ़ीवाद अरू अंधविश्वासा। ये सब है पाखंडी फांसा।।/ शिक्षा बिना रहे ज्ञान अधूरा। ज्ञान शून्य मानव नहीं पूरा।।/ पुत्र पुत्री को एक सम जानो। दोनों का हक बराबर मानो।।/ जब कन्या शिक्षित होई जाही। निज कर्त्तव्य समझ तेहि आही।।/ यहि विधि सभ्य समाज बनाओ। महिला को आगे मह लाओ।।/ घूंघट काढ़ि बैठी रहे, ताते कछु नहि होय। शिक्षित होय सम्मुख लड़ही, अबला कहही न कोय।।''(पृष्ठ 544)

(11) अन्न रूपी देव की पूजा करें- ''तव तन बने अनमोल रतन के। याको राखहु जतन जतन के।।/ तुम्हरे घट माहि बसत सतनामा। नाहक ढूँढत सकल जहाना।।/ अन्नहि करै देह रखवारी। जासे काया पलै हमारी।।/ निशदिन करहु अन्न की पूजा। जेहि समान देव नहीं दूजा।।/ अन्नही गावै अन्नहि बजावै। अन्न बिना मुख बात न आवै।।/ ज्ञान विवके सोच उपजावे। ज्योति पुरुष का दरश करावे।।''(पृष्ठ 602)

(12) इन्द्रियों को वश में रखें, गुरु-वचन का पालन करें; काम-वासना, क्रोध, घमण्ड और लालच का परित्याग करें; जीवों के लिए क्षमा-भाव रखें; सत्य पर विश्वास करें; आपस में प्रेम-भाव रखें- ''निज बस मह इन्द्रीन को राखो। असत त्यागि सत्य मुख भाखो।। नशापान सकल परिहरहु। गुरु गम वाणी सदा उर धरहु।।/ काम क्रोध मद लोभहिं जारो। हिंसा असत मार्ग मत धारो।।/ जीव हिंसा सपनेहु मत कीजै। सकल जीव जग अभय करीजै।।/ सत पर करहु सदा विश्वासा। भ्रम निरवारि घट करै प्रकाशा।।/ सत छांड़ि नहि असत भजो, भजहु सदा सतनाम।/ प्रेम भाव आपस मह राखो, यही मानव पहिचान।।''(पृष्ठ 603)

(13) सबके हृदय में ईश्वर विराजमान है। इसे बाहर ढूँढने की जरूरत नहीं; मूर्ति-पूजा न करें- ''पाथर पूजत तुम जनम गंवाया। एकहु रति लाभ नहिं पाया।।/ सब घट माहि पुरुष कर वासा। तुम काहे ढूढत वन घासा।।/ तीरथ धाम मह मूरत खासा। ये सब पंडन कर है फांसा।।/ घाट घाट बैठेऊ बटपारा। खुद को कहै मुक्ति दातारा।।/ स्वर्ग नर्क कर भेद कहि, दीन्हेऊ मन भरमाय। पूजा पाठ करि दान लेई, तोहिको ठगि ठगि खाय।।''(पृष्ठ 604)

(14) दिन भर की कमाई के एक-चौथाई भाग का बचत करें; पुनः एक-चौथाई अंश को शिक्षा पर खर्च करें; शेष दो भाग में परिवार चलायें- ''दिन भर में जो करेऊ कमाई। चार भाग ताको कर भाई।।/ एक भाग राखहु निज धामा। विपत काल में अहै कामा।।/ एक भाग मह बाल पढ़ावो। ज्ञान अरु शिक्षा मह खर्चावो।।/ शेष भाग पालहु परिवारा। यहि विधि जीवन करहु निरवारा।।''(पृष्ठ 609)

(15) अंतिम उपदेश- नारी शक्ति स्वरूपा हैं, इनका सम्मान करें- "नारी नहिं कठपुतली, जो कोई हाथ नचाय। यामें शक्ति अपार है, ताको देवहु परखाय।।"(पृष्ठ 611)

संदर्भ

नृसिंह, खेमराज मनोहर दास (2008) -संत शिरोमणि गुरु घासीदास नामायण (सतनाम धर्म सद्ग्रंथ) सात खण्डों में, हसौदः रितुराज नृसिंह, पृष्ठ संख्या 205, 209, 210, 213, 215, 266, 267, 270-271, 282-283, 355, 446, 447, 448, 449, 463, 464, 542, 543, 544, 602, 603, 604, 609, 611.